खण्ड-452, अंक-2
सोमवार, 25 माघ, शक संवत् 1926
(14 फरवरी, 2005 ई0)

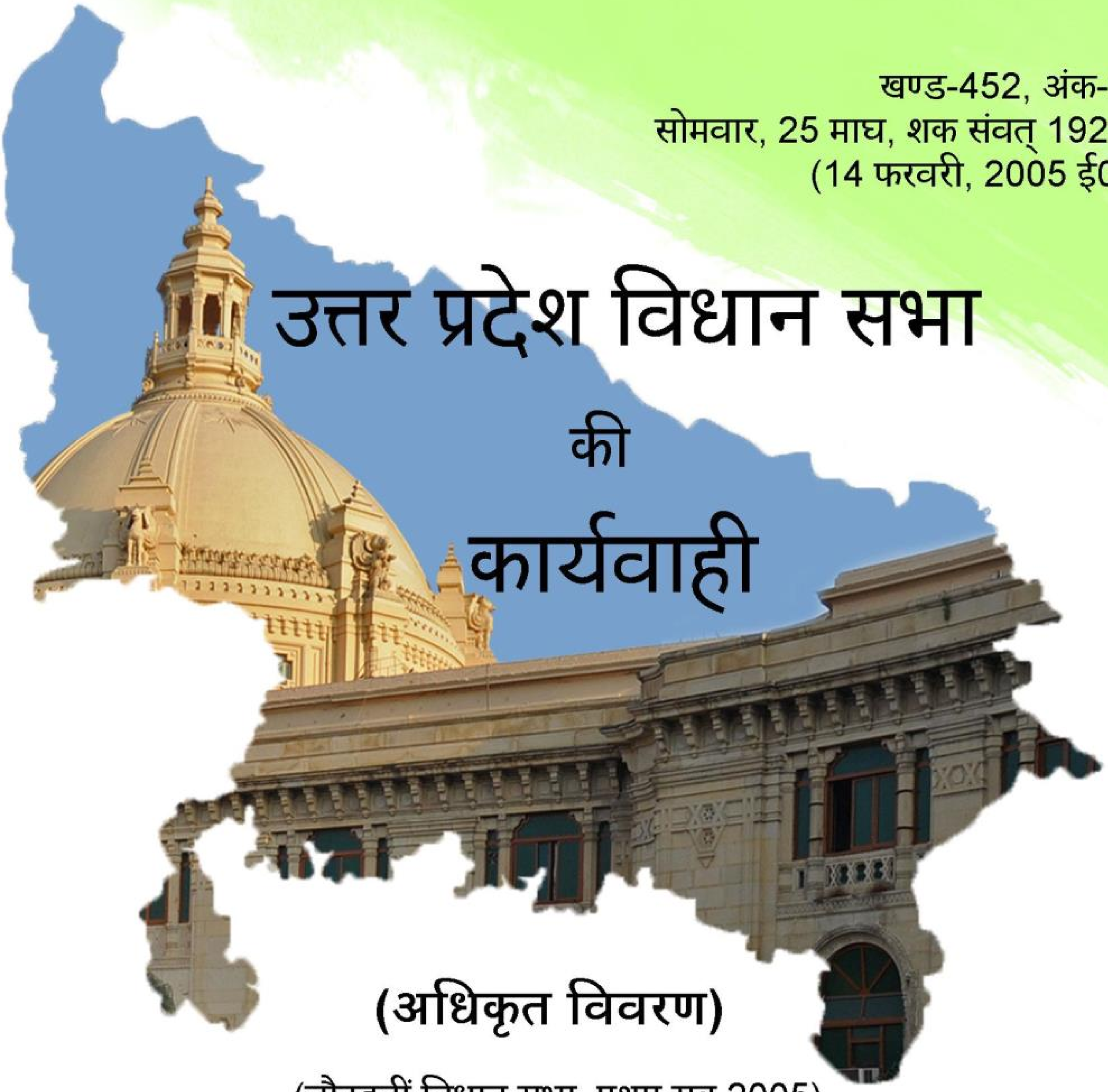

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(चौदहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 2005)

खण्ड 452 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
2005

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21.00 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 रुपये, महसूल सहित रु0 724.25 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	क-ङ
विधान सभा के वर्तमान सदस्य श्री अब्दुल कलाम, श्री राजू पाल तथा श्री रमेश कान्त लवानियां के निधन पर शोकोद्गार	1-9

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

सोमवार, दिनांक 14 फरवरी, 2005

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में दिन के 11 बजे अध्यक्ष श्री माता प्रसाद पाण्डेय की अध्यक्षता में आरम्भ हुई)

उपस्थित सदस्य-279

अकीलुर्रहमान खां, श्री	मुरादाबाद	अम्बेश कुमारी, श्रीमती	महोबा
अक्षयवर लाल, श्री	बहराइच	अयोध्या प्रसाद पाल, श्री	फतेहपुर
अखिलेश कुमार सिंह, श्री	रायबरेली	अरविन्द गिरि, श्री	खीरी
अजय कुमार, डा0	बागपत	अरुणा तोमर, श्रीमती	कानपुर नगर
अजय राय, श्री	वाराणसी	अवधेश कुमार वर्मा, श्री	शाहजहांपुर
अजीम भाई, श्री	फिरोजाबाद	अशोक कुमार कटियार, श्री	कानपुर देहात
अताउल रहमान, श्री	बरेली	अशोक सिंह चौहान, श्री	मैनपुरी
अनवर महमूद, श्री	बलरामपुर	आनन्द प्रकाश लोधी, श्री	फतेहपुर
अनार सिंह दिवाकर, श्री	एटा	आर0 एस0 कुशवाहा, श्री	खीरी
अनिल कुमार पाण्डेय, श्री	सुल्तानपुर	आर0 के0 चौधरी, श्री	लखनऊ
अनिल कुमार मौर्य, श्री	मिर्जापुर	आर0 के0 सिंह पटेल, श्री	चित्रकूट
अनिल कुमार वर्मा, श्री	सीतापुर	आलम बदी, श्री	आजमगढ़
अनिल कुमार पासवान, श्री	हरदोई	आलोक कुमार शाक्य, श्री	मैनपुरी
अनिल कुमार सिंह यादव, श्री	एटा	आशा किशोर, श्रीमती	रायबरेली
अनिल सिंह, श्री	सिद्धार्थनगर	आशीष यादव, श्री	बदायूं
अनीस अहमद खां उर्फ फूलबाबू, श्री	पीलीभीत	आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री	बदायूं
अनुग्रह नारायण उर्फ खोखा सिंह, श्री	देवरिया	इकबाल महमूद, श्री	मुरादाबाद
अनूप कुमार पाण्डेय, श्री	बस्ती	इन्द्रजीत सरोज, श्री	कौशाम्बी
अन्सार अहमद, श्री	इलाहाबाद	इन्द्रदेव सिंह, डा0	बिजनौर
अब्दुल मन्नान, श्री	हरदोई	इलम सिंह, श्री	सहारनपुर
अब्बास अली जैदी उर्फ		उज्जवल रमण सिंह, श्री	इलाहाबाद
रुश्दी मियां, श्री	बाराबंकी	उदयराज यादव, श्री	उन्नाव
अमरजीत सिंह जनसेवक, श्री	फतेहपुर	उमा किरन, श्रीमती	मुजफ्फरनगर
अमर सिंह यादव पुत्र	हाथरस	उमा शंकर कुशवाहा, श्री	गाजीपुर
श्री सुन्दर सिंह, श्री		ओमकार सिंह यादव, श्री	बदायूं
अमीता सिंह, श्रीमती	सुल्तानपुर	ओम प्रकाश, श्री	सीतापुर
अम्बिका चौधरी, श्री	बलिया	ओम प्रकाश (ओ0पी0 सिंह), श्री	सुल्तानपुर

ओम प्रकाश पाण्डेय, श्री	सुल्तानपुर
ओम प्रकाश सिंह, श्री	मिर्जापुर
ओमवती देवी, श्रीमती	बिजनौर
कपिल देव यादव, श्री	मऊ
कमाल यूसुफ मलिक, श्री	सिद्धार्थनगर
कल्यान सिंह दोहरे, श्री	कन्नौज
काशीराम, श्री	रामपुर
किरण पाल कश्यप, श्री	मुजफ्फरनगर
किशन लाल बघेल, सेठ	आगरा
कुलदीप सिंह सेंगर, श्री	उन्नाव
कृष्ण कुमार उर्फ सतीश वर्मा, श्री	हरदोई
कृष्णानन्द राय, श्री	गाजीपुर
कृष्णा पासवान, श्रीमती	फतेहपुर
कैलाश चौरसिया, श्री	मिर्जापुर
कोविद कुमार, श्री	शाहजहांपुर
कौकब हमीद खां, श्री	बागपत
कौशल किशोर, श्री	खीरी
कौशल किशोर, श्री	लखनऊ
गंगा बक्श सिंह, डा0	उन्नाव
गीता सिंह, श्रीमती	बलरामपुर
गुलाब देवी, श्रीमती	मुरादाबाद
घूरा राम, श्री	बलिया
चन्द्र किशोर, श्री	महराजगंज
चन्द्रभद्र सिंह, श्री	सुल्तानपुर
चन्द्रमणि कान्त सिंह, श्री	श्रावस्ती
छेदी राम, श्री	गाजीपुर
छोटे लाल यादव, श्री	बाराबंकी
जंग बहादुर, श्री	सुल्तानपुर
जगदीश नारायण (राय), श्री	जौनपुर
जगदीश मिश्र बाल्टी बाबा, श्री	कुशीनगर
जगदीश सिंह राणा, श्री	सहारनपुर
जगदीश सोनकर, श्री	जौनपुर
जगन प्रसाद गर्ग, श्री	आगरा
जगराम सिंह, श्री	मुरादाबाद
जटाशंकर सिंह, श्री	बहराइच
जय प्रकाश यादव, श्री	गोरखपुर
जय प्रताप सिंह, श्री	सिद्धार्थनगर
जयराम विमल, श्री	अम्बेडकरनगर
जयवीर सिंह, ठाकुर	अलीगढ़
जियाउद्दीन रिजवी, श्री	बलिया
ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री	महराजगंज
दया राम , श्री	कौशाम्बी
डी0 प्रसाद अहिरवार, श्री	चित्रकूट
दया शंकर वर्मा, श्री	जालौन
दिलीप कुमार वर्मा, श्री	बहराइच
दीनानाथ कुशवाहा, श्री	देवरिया
दीनानाथ भाष्कर, श्री	सन्त रविदास नगर, भदोही
दुर्गा प्रसाद यादव, श्री	आजमगढ़
देवकी नन्दन, श्री	हाथरस
देव नारायण उर्फ	
जी0 एम0 सिंह, श्री	गोरखपुर
देवेन्द्र नागपाल, श्री	ज्योतिबाफूले नगर
देवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री	रायबरेली
द्वारिका प्रसाद, श्री	सन्त कबीर नगर
धर्मपाल सिंह, श्री	गाजियाबाद
धर्मराज निषाद, श्री	अम्बेडकरनगर
धर्म सिंह सैनी, डा0	सहारनपुर
धर्मेन्द्र कुमार कश्यप, श्री	बरेली
धू राम लोधी, चौधरी	हमीरपुर
नत्थू सिंह, श्री	उन्नाव
नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा0	इलाहाबाद
नरेन्द्र सिंह वर्मा, श्री	सीतापुर
नरेन्द्र सिंह यादव, श्री	फर्रुखाबाद
नरेन्द्र सिंह सिसौदिया, श्री	गाजियाबाद
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री	हरदोई
नवाब सिंह नागर, श्री	गौतमबुद्ध नगर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

नारद राय, श्री	बलिया
पीटर फैन्थम, श्री	नाम-निर्देशित
पीतम राम, श्री	पीलीभीत
पूर्णमासी देहाती, श्री	कुशीनगर
प्रदीप जैन "आदित्य", श्री	झांसी
प्रदीप माथुर, श्री	मथुरा
प्रभु दयाल, श्री	मेरठ
प्रमोद कुमार, श्री	प्रतापगढ़
प्रमोद गौड़, श्री	अलीगढ़
प्रागी लाल अहिरवार, श्री	झांसी
प्रेम पाल सिंह यादव, श्री	बदायूं
फतेह बहादुर, श्री	महराजगंज
फसीहा बशीर, चौधरी (गजाला)	देवरिया
फागू, श्री	मऊ
बंशीधर राज, श्री	खीरी
बादशाह सिंह, श्री	हमीरपुर
बाबूराम, एम0 काम0, श्री	जालौन
बाबू लाल कुशवाहा, श्री	बांदा
बीजू पटनायक, श्री	गाजीपुर
बीना भारद्वाज, श्रीमती	रामपुर
बृजेन्द्र कुमार व्यास (डमडम महराज), श्री	झांसी
बैजनाथ पासवान, श्री	मऊ
बैजनाथ दुबे, श्री	गोण्डा
भगेलू राम, श्री	सुल्तानपुर
भरत सिंह, श्री	बलिया
मतेश चन्द्र सोनकर, श्री	कौशाम्बी
मदन गोपाल वर्मा, श्री	फतेहपुर
मदन चौहान, श्री	गाजियाबाद
मदन भैया, श्री	बागपत
मदन सिंह उर्फ सन्तोष कुमार, श्री	इटावा
मलिक मसूद, श्री	आजमगढ़
मशहूद खां, श्री	बलरामपुर
मस्तराम चौ0, एडवोकेट	उन्नाव
महेन्द्र कुमार सिंह उर्फ झीन बाबू, श्री	सीतापुर
महेन्द्र सिंह जाटव, चौधरी	अलीगढ़
महेन्द्र सिंह यादव, श्री	बुलन्दशहर
महेन्द्र सिंह राजपूत, श्री	इटावा
माता प्रसाद पाण्डेय, श्री	सिद्धार्थनगर
माया प्रसाद, श्रीमती	खीरी
मुकुट बिहारी वर्मा, श्री	बहराइच
मुलायम सिंह यादव, श्री	बदायूं
मुंशीलाल गौतम, श्री	बुलन्दशहर
मूलचन्द्र चौहान, ठाकुर	बिजनौर
मोख्तार अंसारी, श्री	मऊ
मोहन देव शंखवार, श्री	फिरोजाबाद
मोहम्मद आकिल उर्फ मुन्ना मियां, श्री	मुरादाबाद
मोहम्मद आजम खां, श्री	रामपुर
मोहम्मद इरशाद खां, श्री	लखनऊ
मोहम्मद बशीर, चौधरी	आगरा
मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी, श्री	इलाहाबाद
यशपाल चौधरी, श्री	खीरी
यशवन्त सिंह, डा0	मुजफ्फरनगर
योगेन्द्र कुमार, श्री	बदायूं
योगेश प्रताप सिंह उर्फ योगेश भइया, श्री	गोण्डा
रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भइया, श्री	प्रतापगढ़
रणवीर राणा, श्री	मेरठ
रतन लाल अहिरवार, श्री	झांसी
रमापति उर्फ रमाकान्त, श्री	कुशीनगर
रमेश चन्द्र बिन्द, डा0	मिर्जापुर
रविन्द्र पुण्डीर, प्रो0	मेरठ
राकेश सचान, श्री	कानपुर देहात
राज किशोर सिंह, श्री	बस्ती
राजनाथ यादव, श्री	वाराणसी
राजपाल सिंह बालियान, श्री	मुजफ्फरनगर
राजपाल सिंह सैनी, श्री	मुजफ्फरनगर
राजरानी रावत, श्रीमती	बाराबंकी

उत्तर प्रदेश विधान सभा

राजलक्ष्मी वर्मा, श्रीमती	बाराबंकी
राजीव कुमार सिंह, श्री	बाराबंकी
राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री	प्रतापगढ़
राजेन्द्र प्रसाद यादव, श्री	लखनऊ
राजेन्द्र सिंह चौहान, श्री	एटा
राजेन्द्र सिंह राणा, श्री	सहारनपुर
राजेश अग्रवाल, श्री	बरेली
राजेश कुमार, श्री	खीरी
राधेश्याम जायसवाल, श्री	सीतापुर
राधेश्याम सिंह, श्री	कुशीनगर
राम इकबाल सिंह, श्री	बलिया
राम करन आर्य, श्री	बस्ती
राम कृष्ण, श्री	सीतापुर
राम गोविन्द चौधरी, श्री	बलिया
रामनाथ, श्री	प्रतापगढ़
राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री	कन्नौज
राम प्रताप सिंह, श्री	गोण्डा
राम प्रसाद चौधरी, श्री	बस्ती
रामबाबू हरित, डा0	आगरा
राम बिशुन आजाद, श्री	गोण्डा
राम मगन, श्री	बाराबंकी
राम लाल अकेला, श्री	रायबरेली
रामवीर सिंह, श्री	फिरोजाबाद
राम शंकर पाल, श्री	उन्नाव
राम सेवक, श्री	सुल्तानपुर
राम स्वरूप सिंह, श्री	बिजनौर
रामहेत, श्री	सीतापुर
रामेश्वर सिंह यादव, श्री	एटा
रिजवान अहमद खां, श्री	ज्योतिबाफूले नगर
रियाज अहमद, श्री	पीलीभीत
लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, डा0	मेरठ
लल्लू सिंह, श्री	फैजाबाद
लालजी टण्डन, श्री	लखनऊ
लाल बहादुर यादव, श्री	जौनपुर
लुईस खुर्शीद, श्रीमती	फर्रुखाबाद
वसीम अहमद, श्री	आजमगढ़
विजमा यादव, श्रीमती	इलाहाबाद
विजय कुमार मिश्रा, श्री	सन्त रविदासनगर, भदोही
विजय बहादुर पाल, श्री	कन्नौज
विद्या चौधरी, श्रीमती	आजमगढ़
विद्या सागर गुप्ता, श्री	लखनऊ
विनय शाक्य, श्री	औरैया
विनोद कुमार सिंह, श्री	जौनपुर
विनोद तिवारी, डा0	पीलीभीत
विमल कृष्ण अग्रवाल, श्री	बदायूं
विमला राकेश, श्रीमती	सहारनपुर
विशम्भर प्रसाद निषाद, श्री	बांदा
विश्राम सिंह यादव, श्री	हरदोई
वीरेन्द्र प्रताप सिंह "मुन्ना", श्री	शाहजहांपुर
वीरेश्वर, श्री	अलीगढ़
वेदराम भाटी, श्री	बुलन्दशहर
शचीन्द्र नाथ त्रिपाठी, श्री	सन्त रविदासनगर, भदोही
शब्बीर, श्री	बहराइच
शरदवीर सिंह, श्री	शाहजहांपुर
शहजिल इस्लाम, श्री	बरेली
शाकिर अली, श्री	देवरिया
शारदा देवी, श्रीमती	गोरखपुर
शारदा नन्द अंचल, श्री	बलिया
शाहिद मंजूर, श्री	मेरठ
शिव कुमार बेरिया, श्री	कानपुर देहात
शिव चरन प्रजापति, श्री	हमीरपुर
शिव तपस्या पासवान, श्री	चन्दौली
शिव पाल सिंह यादव, श्री	इटावा
शिव प्रताप यादव, डा0	बलरामपुर
शिवाकान्त ओझा, प्रोफेसर	प्रतापगढ़
शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री	महराजगंज
शिशुपाल सिंह यादव, श्री	एटा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

श्याम सिंह अहेरिया, श्री	मथुरा
श्याम प्रकाश, श्री	हरदोई
श्याम लाल रावत, श्री	सीतापुर
श्रद्धा यादव, श्रीमती	जौनपुर
श्रीराम भारती, श्री	मिर्जापुर
संजीव दरियाबादी, श्री	कानपुर नगर
सत्य प्रकाश अग्रवाल (कैलाश डेरी वाले), श्री	मेरठ
सदल प्रसाद, श्री	गोरखपुर
सन्ध्या कटेरिया, कु0	मैनपुरी
समरपाल सिंह, श्री	बागपत
सीताराम निषाद, श्री	फैजाबाद
सुखदेवी वर्मा, श्रीमती	इटावा
सुन्दर लाल, श्री	उन्नाव
सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री	जौनपुर
सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री	वाराणसी
सुरेश कुमार खन्ना, श्री	शाहजहांपुर
सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री	लखनऊ
सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री	लखनऊ
सुल्तान बेग, श्री	बरेली
सुशील चौधरी, डा0	सहारनपुर
सूरज सिंह शाक्य, श्री	एटा
सोमारू राम सरोज, श्री	जौनपुर
सोवरन सिंह, श्री	मैनपुरी
स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री	रायबरेली
हरि ओम यादव, श्री	फिरोजाबाद
हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी", श्री	वाराणसी
हीरा लाल गौतम, श्री	आजमगढ़
हुकुम सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
होशियार सिंह, श्री	बुलन्दशहर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

विधान सभा के वर्तमान सदस्य श्री अब्दुल कलाम, श्री राजू पाल तथा श्री रमेश कान्त लवानियां के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)-

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन को निधन की दुर्भाग्यपूर्ण सूचना दे रहा हूं। इस सदन के तीन सदस्य एक महीने से कम समय में हमारे बीच से चले गए। जिनमें श्री अब्दुल कलाम जो समाजवादी पार्टी के विधायक थे, वह निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी उत्तरी, जिला वाराणसी से दो बार विधायक चुने गए थे। पहली बार वह वर्ष 1996 में और दूसरी बार वर्ष 2002 में निर्वाचित हुए थे। श्री कलाम बहुत ही उत्साही और जनता के बीच लोकप्रिय नेता थे। मैंने स्वयं देखा है, कोई भी दुःखी व्यक्ति उनके पास जाता था, वह उसकी सेवा में जुट जाते थे। वह कई सामाजिक संगठनों में भी जुड़े रहे, विभिन्न आन्दोलनों में कई बार जेल भी गए। समाज सेवा में उनकी विशेष रुचि थी। श्री कलाम समाजवादी पार्टी के एक बड़े नेता के रूप में उभर कर सामने आये थे। उनका 5 जनवरी, 2005 को निधन हो गया। उनके निधन से समाजवादी पार्टी ही नहीं, वाराणसी ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया है।

इस सदन के दूसरे सदस्य श्री राजू पाल की 25 जनवरी, 2005 को निर्मम हत्या हुई। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक विधायक की हत्या इस तरह से की जाये। इसकी हम निन्दा करते हैं और इससे सदन भी सहमत होगा कि ऐसी घटनाओं की निन्दा करनी चाहिए। लोकतंत्र में जहां हिंसा का कोई स्थान नहीं होता है, वहां एक विधायक की हत्या हुई। सरकार का जहां तक सवाल है, इस मामले में सरकार ने कठोर कार्यवाही की है। श्री राजू पाल बहुजन समाज पार्टी से उप चुनाव में निर्वाचन क्षेत्र इलाहाबाद पश्चिमी से विजयी हुए थे। मान्यवर, उनकी हत्या करने वाले चाहे जो भी हों उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी और हम सदन से भी चाहेंगे कि इस तरह की हत्याओं के बारे में सबको मिलकर इसका समाधान निकालना चाहिए, सहयोग देना चाहिए कि आखिर इस तरह की हत्याएं क्यों शुरू हुई हैं ? यह कानून से ही नहीं बल्कि सभी दलों के नेताओं को मिलकर इस पर गम्भीर चिंतन विचार करना चाहिए। हमें अफसोस है कि बहुजन समाज पार्टी के एक नौजवान विधायक की दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से निर्मम हत्या हुई।

श्री रमेशकान्त लवानियां जी से भी मेरा बहुत सम्पर्क रहा। उनका निधन 3 फरवरी को हुआ। वह आगरा जनपद के बहुत लोकप्रिय नेता रहे, वह आगरा के महापौर भी रहे। महापौर रहकर उन्होंने आगरा की जनता की सेवा की। उस शहर को विकास के पथ पर ले जाने का काम किया। जब वह महापौर नहीं भी रहे तब भी उन्होंने जनसेवा का काम किया। पहली बार वह 1997 में खैरागढ़, आगरा से चुनाव जीतकर, और बाद में भी सदन में आये। उनकी आगरा शहर के विकास में विशेष रुचि थी। इसके अलावा विभिन्न संगठनों, जनता के कार्यों के क्षेत्र में उन्होंने काम किया है और आगरा जनपद के बड़े लोकप्रिय नेता बने। आगरा ही नहीं आसपास के भी क्षेत्रों में श्री लवानियां जी बड़े लोकप्रिय थे। उनके निधन से यह सदन दुखी है। हमें खेद है कि भारतीय जनपद पार्टी के वह

नेता हमारे बीच से चले गये हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे दल की तरफ से, पूरे सदन की तरफ से इन तीनों विधायकों जिनका निधन हुआ है उनके परिवार, उनकी पार्टी सभी तक हमारे सम्वेदना पहुंचाने की कृपा करें।

*नेता विरोधी दल (श्री लालजी टण्डन)-

मान्यवर, इस सदन के लिए बड़े दुःख की बात है कि हम एक साथ 3-3 सिटिंग विधायकों को अपना श्रद्धांजलि दे रहे हैं। सम्भवतः इसके पहले ऐसा कभी नहीं हुआ। तीनों ही अलग-अलग दलों के हैं। एक की हत्या हुई। हम सब मानते हैं कि लोकतंत्र में हत्या का कोई स्थान नहीं है। तर्क-वितर्क से अपनी बातों को रखना चाहिए लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि यह प्रवृत्ति बढ़ रही है। हम सबको इस पर गम्भीर चिंतन करना चाहिए और बैठकर कोई ऐसा रास्ता निकालना चाहिए कि इस स्थिति तक बात न जाने पाये। मान्यवर, जहां लखनियां जी सबसे बुजुर्ग और अनुभवी विधायक थे वहीं वह समाज के कार्यों में लगे रहते थे। उनका लम्बा सार्वजनिक जीवन बेदाग रहा। वहीं पर बिलकुल नौजवान श्री राजू पाल जो पहली बार विधायक चुने गये और उसके बाद शायद वह सदन में आ भी नहीं पाये और उनकी हत्या हो गयी। श्री अब्दुल कलाम साहब, वह भी इस सदन के महत्वपूर्ण विधायक थे और उनकी व्यवहार कुशलता जो है वह लोगों को याद आती रहेगी। मैं तीनों भूतपूर्व माननीय सदस्यों के प्रति अपनी तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार को इस महान दुःख को सहन करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं। आपसे यह भी अनुरोध है कि मेरी तथा मेरे दल द्वारा जो उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गयी है वह उनके परिवार को सूचित करने का कष्ट करें।

*श्री स्वामी प्रसाद मौर्य-

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल जी ने जो हमारे वर्तमान तीन माननीय सदस्यों के निधन से जो अपनी शोक संवेदनाएं व्यक्त की हैं, मैं अपने को उनसे सम्बद्ध करता हूं और साथ ही मान्यवर, यह बहुत ही दुःखद घड़ी है कि हम वर्तमान तीन माननीय सदस्यों की एक साथ शोक संवेदना करने के लिए यहां पर एकत्रित हुए हैं। श्री अब्दुल कलाम जी हमारे बहुत ही नौजवान सम्मानित विधायकों में से थे, जो बनारस जिले से प्रतिनिधित्व करते थे। 5 जनवरी, 2005 को उनका निधन हुआ और जैसा कि आपको मालूम है कि श्री कलाम जी अभी मात्र 47 साल के थे और इस अल्पकालिक जीवन में वे विधान सभा सदस्य के रूप में दो-दो बार यहां चुनकर आये और उसके माध्यम से उन्होंने समय-समय पर प्रदेश की समस्याओं के प्रति अपनी गम्भीरता जाहिर की। स्वाभाविक है कि ऐसे सदस्य के निधन पर केवल बनारस ही नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश को ऐसे उदीयमान नेता के निधन से क्षति हुई है। मान्यवर, यद्यपि की जो भी पैदा होता है निधन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। कभी न कभी कहीं न कहीं उस रास्ते से गुजरना पड़ता है। लेकिन

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

आकस्मिक निधन होता है वह असहनीय होता है। कलाम जी का निधन इस तरह से हुआ वह सभी लोगों को असहनीय रहा।

लेकिन इसी क्रम में दूसरे माननीय सदस्य श्री राजू पाल जी, जो उनसे भी ज्यादा नौजवान थे, मात्र 30 साल के थे, अभी हाल ही में वे उप चुनाव में इलाहाबाद पश्चिमी शहर विधान सभा क्षेत्र से बी0एस0पी0 के विधायक के रूप में निर्वाचित होकर यहां आये थे, 25 जनवरी, 2005 को उनकी जघन्य हत्या हो गयी। मान्यवर, यह हत्या किसी विधायक की नहीं, यह प्रजातांत्रिक मूल्यों की हत्या है, प्रजातंत्र की हत्या है। प्रजातंत्र में किसी हत्या का स्थान नहीं होता। स्वाभाविक मौत होती है तो उसकी पीड़ा किसी न किसी रूप में बर्दास्त करने की क्षमता परिवारजनों में होती है, सहयोगियों में होती है, साथियों में होती है लेकिन जब इस तरीके से किसी को हत्या का शिकार बनाया जाय तो वह बहुत ही दुःखद पहलू होता है। मान्यवर, आपको याद होगा जिस दिन हत्या हुई, मीडिया-प्रेस के लोगों के माध्यम से हमें दूरभाष पर सूचना मिली, मैंने तत्काल आपके कक्ष में जाकर और व्यक्तिगत रूप से आपको अवगत कराया और यह भी अवगत कराया कि तात्कालिक उसमें जो भी सूचना हो आप अपने माध्यम से जानकारी करके हमें भी अवगत करायें। घण्टों प्रयास करने के बावजूद भी आपको स्वयं को भी सही सूचना नहीं मिल पाई और हमें भी सही सूचना नहीं मिल पाई। आपको भी बाहर निकलना था और ठीक आपके कक्ष से निकलने के बाद मैं भी इलाहाबाद रात बारह बजे पहुंचा। मान्यवर, मैं इस मामले पर माननीय नेता सदन से बहुत गम्भीरता से निवेदन करना चाहता हूं कि हत्या हुई, जघन्य हत्या हुई यह बात और है, लेकिन सरकार की संवेदनशीलता किस हद तक खत्म थी मैं आपके माध्यम से निवेदन के साथ कहना चाहता हूं, मैंने व्यक्तिगत रूप से टेलीफोन के माध्यम से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नगर से निवेदन किया कि इसका पारिवारिक जनों की उपस्थिति में पोस्ट-मार्टम कराया जाये, पोस्ट-मार्टम पारिवारिक जनों को सौंपा जाए। व्यक्तिगत 15 मिनट तक मेरी एस0एस0पी0 से वार्ता हुई और एस0पी0 सिटी से वार्ता हुई, मैं वहां था मैंने अलग अनुरोध किया, श्री बी0 आर0 वर्मा जी जो विधान सभा में पूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं और वर्तमान में विधान परिषद् में हैं और दल के प्रदेश अध्यक्ष भी हैं, उन्होंने भी व्यक्तिगत रूप से अनुरोध किया, लेकिन हम तो केवल इतना ही निवेदन करेंगे कि संवेदनशून्यता जो अधिकारियों की देखने को मिली वह हत्या से भी ज्यादा दुःखद रहा। वीरप्पन जैसा कुख्यात विश्व का अपराधी जब मारा गया था तो उसकी लाश उसके परिवारीजनों को सौंपी जाती है, लेकिन राजू पाल जो इस सदन के सदस्य थे, वर्तमान में विधायक थे और रातों-रात गैर संवैधानिक तरीके से पोस्ट-मार्टम कराया जाना और जो मेडिकल लॉ है उसके तहत रात में पोस्ट-मार्टम कराया ही नहीं जा सकता, डे-लाईट में पोस्ट-मार्टम कराये जाने का प्राविजन है, उसके अलावा भी हम यह मान लेते हैं कि किन्हीं कारणोंवश रात में ही पोस्ट-मार्टम हो गया। उसकी हत्या के नौ दिन पूर्व ही उसकी शादी हुई थी उसकी विधवा पूजा पाल की मांग का सिन्दूर भी ठीक से साफ नहीं हो पाया था, वह रोती रही, बिलखती रही, प्रशासनिक अधिकारियों से और हम भी वहां मौजूद थे वह हमसे भी यह अपेक्षा करती रही कि यह हमारे दल के नेता हैं और लाश मुहैया कराने में हमारी मदद करेंगे। वह गिड़गिड़ाती रही हम भी गिड़गिड़ाते रहे, लेकिन पुलिस प्रशासन ने इस मामले की बहुत ही अनदेखी

की, यह बहुत ही दुःखद है और मान्यवर, हद तो तब हो गई जब लाश को चार बजे सुबह पुलिस अपनी देख-रेख में बिना किसी परिवारीजनों के, नाते-रिश्तेदार के और बहुजन समाज पार्टी के किसी भी सदस्य की गैर उपस्थिति में नामौजूदगी में जलवाने का काम किया और दिन में जब मैंने जिलाधिकारी से इस बात को पूछा कि बार-बार अनुरोध करने के बावजूद आप लोग अपना सब कर लिये तो उन्होंने 26 जनवरी, की दुहाई दी कि आज 26 जनवरी, थी, इसलिए ऐसा किया। यह अधिकारियों की सोच, एक विधायक की हत्या,. उसके उपरान्त उनकी विवेकशून्यता, संवेदनशून्यता, वह मान्यवर उस हत्या से भी दुःखद है।

नेता सदन से मैं अनुरोध करूंगा कि हादसा किसी के साथ हो सकता है, लेकिन जो मान्यवर संवेदनशीलता है, मानवीयता है, उसका अपना एक स्थान होता है और उसका अनुकरण किया जाना चाहिए था, जो नहीं किया गया। मान्यवर, उससे भी दुःखद है कि यह सरकार के कुछ लोग यह कह देते हैं कि उस पर मुकदमें थे। मान्यवर, किसी भी राजनीतिक व्यक्ति पर मुकदमें होना कोई बहुत बड़ी चीज नहीं है। मान्यवर, जो भी स्वाभिमान और सम्मान की लड़ाई लड़ता है उसे चाहे-अनचाहे मुकदमों के दौर से गुजरना पड़ता है। इसमें हत्या अभियुक्तों को क्लीनचिट देना, प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा सब बातों की अनदेखी-नजरअंदाज कर देना, अपनी गलतियों को छिपाने का प्रयास करना यह और भी गलत पहलू है। हम मान्यवर, चाहेंगे कि इसको बड़ी गम्भीरता से लें। मान्यवर, पिछले सत्र के दौरान हमने व्यक्तिगत रूप से अनुरोध किया था, हमारे माननीय सदस्यों ने भी अनुरोध किया था, राजू पाल ने अपनी सुरक्षा के सम्बन्ध में आपसे भी निवेदन किया था। महामहिम राज्यपाल जी को, मानवाधिकार आयोग को, माननीय मुख्य मंत्री जी को, प्रमुख सचिव, गृह को भी सुरक्षा के लिए पत्र दिया था और मान्यवर, अगर सम्भवतः प्रशासनिक हस्तक्षेप समय रहते हो जाता, उचित कार्यवाही हो जाती तो विधायक राजू पाल की हत्या शायद न होती।

मान्यवर, इसका उनको पूर्वाभास था क्योंकि उन पर तीन-तीन बार जानलेवा हमला हुआ था, उनके निर्वाचन का परिणाम घोषित होने के तीसरे दिन ही, 13 नवम्बर, 2004 को और उसके बाद 28-12-2004 को उन पर हमला हुआ था और जिसकी एफ0आई0आर0 भी 29-12-2004 को दर्ज हुई थी और उस एफ0आई0आर0 में 7 लोग नामजद किये गये थे उसमें शामिल एक व्यक्ति का नाम उसमें से पुलिस प्रशासन द्वारा बाहर कर दिया गया था। यह सब लिखत-पढ़त में है वह तो जब भी नेता सदन चाहेंगे, वह सब आपके सामने आ जायेगा। साथ ही साथ उस घटना के बाद राजू पाल जी ने अपनी सुरक्षा के लिए यहां तथा भारत सरकार में लिखा-पढ़ी की। उन्होंने सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री जी को पत्र दिया जिसके जवाब में दिनांक 10 जनवरी, 2005 को मंत्री जी के निजी सचिव ने मण्डलायुक्त, इलाहाबाद को चार सुरक्षा कर्मी उपलब्ध कराये जाने के सीधे निर्देश दिये। न उन्होंने यह लिखा कि इस पर विचार कीजिए बल्कि स्पष्ट निर्देश दिये कि चार गनर उपलब्ध कराये जायें। मान्यवर, इसी क्रम में उस पत्र के माध्यम से निजी सचिव ने यह भी इंगित किया कि चूंकि इस प्रकरण की उन्होंने अपने स्तर से जांच करायी है और जिसमें तथ्य सही पाये गये इसलिये मण्डलायुक्त, इलाहाबाद को अपने पत्र संख्या-7897 द्वारा चार गनर तत्काल उपलब्ध कराये जाने के

निर्देश दिये और उनके आवास पर पी0ए0सी0 तैनात किये जाने के लिए भी आदेश दिये। मान्यवर, यह साफ-साफ उस पत्र में वर्णित है। मान्यवर, उसी में मण्डलायुक्त को दूसरा निर्देश था कि विधायक के रिश्तेदार अशोक कुमार सिंह सन आफ राम आसरे नीवा के मकान में जबरन घुसकर परशुराम द्वारा किये गये 2 लाख रुपये के लूट के कृत्य की भी जांच आप अपने स्तर से सुनिश्चित करें। यह निर्देश था और वह पत्र जो उन्होंने वहां सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री भारत सरकार को दिया था वही पत्र मानवाधिकार को भी दिया था और वही पत्र महामहिम राज्यपाल जी को दिया, महामहिम राज्यपाल जी को दिया सुरक्षा के लिए और यह सुरक्षा के लिए पत्र दिया गया 4-11-04 को और इसमें महामहिम राज्यपाल द्वारा 17-11-04 को प्रमुख सचिव, गृह को निर्देश दिया गया कि कैन्ट थाने की पुलिस एवं क्षेत्राधिकारी, थाना सिविल लाइन के प्रभारी निरीक्षक व अन्य तमाम पुलिस फोर्स द्वारा विधायक के साथ की गयी बदसलूकी की जांच एवं सुरक्षा व्यवस्था किये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करायें, यह महामहिम राज्यपाल द्वारा कहा गया। एक इतना गम्भीर प्रकरण, 3-3 बार 5 माह के अन्दर जानलेवा हमला और उस हमले के बाद अपनी सुरक्षा के लिए निरन्तर गुहार की जाती रही लेकिन मान्यवर, उसकी अनदेखी की गयी।

मान्यवर,राजू पाल विधायक जब निर्वाचित घोषित किये गये थे, परिणाम आया था तो एक राजनेता जो सांसद भी हैं इलाहाबाद के उन्होंने कहा था कि 6 माह के अन्दर यहां दुबारा चुनाव होगा और यह इसी की परिणति है। यह इतना गम्भीर है, कि ऐसी स्थिति में हम किसी के निधन पर शोकसंवेदना व्यक्त कर दें और इसी से अपने कार्यों की इतिश्री समझ लें तो यह अच्छी बात नहीं होगी बल्कि हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि इस सदन के माननीय सदस्य तो बहुमूल्य हैं क्योंकि वह लाखों लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रदेश में किसी की हत्या ऐसी स्थिति में न हो। लेकिन मान्यवर, घटनाएं तो घटित हो जाया करती हैं इसीलिए उसको एक्सीडेंट या घटना बोलते हैं लेकिन जिस घटना के प्रति हम सावधान करते रहे सदन के माध्यम से निवेदन किया माननीय मुख्य मंत्री, मानवाधिकार, न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार और प्रमुख सचिव गृह, उत्तर प्रदेश सभी से निवेदन किया और उसके बावजूद एक नहीं सुनी गयी और राजू पाल की हत्या हुई, एक साजिश के तहत हुई। तो हम एक और निवेदन करना चाहते हैं आपके माध्यम से नेता सदन से क्योंकि नेता सदन कटिबद्ध हैं, वह भी जानते हैं कि इस तरह से लोकतंत्र में हत्या का कोई स्थान नहीं है, किसी राजनीतिक व्यक्ति को इस तरह से राजनीतिक मौत का शिकार बनाया जाय इसके हमेशा आप विरोधी रहे हैं, आप भी एक स्वच्छ प्रजातंत्र चाहते हैं। तो मान्यवर, आज तो हम सभी इस दुःख की घड़ी में इकट्ठा हैं शोकसंवेदना व्यक्त करते हैं। हम निवेदन करते हैं कि हम सभी की भावनाएं उनके परिवारजन तक पहुंचाई जायं।

इसी के साथ ही साथ हमारे वरिष्ठ सदस्य श्री रमेश कान्त लवानिया जी जो बहुत उम्रदराज थे, बहुत शालीन थे, मान्यवर, समय-समय पर हम लोगों को अपनी राय भी दिया करते थे वह अब हमारे बीच में नहीं हैं। तो कुल मिलाकर हम अपने इन तीनों माननीय सदस्यों के निधन पर अपनी ओर से, बहुजन समाज पार्टी की ओर से शोक संवेदना व्यक्त करते हैं और आपसे अनुरोध करते हैं

कि हम सभी लोगों की भावनाओं को उन सभी, हमारे माननीय सदस्यों के परिवारजनों को शोक संवेदना पहुंचाने का कष्ट करें। इसी के साथ ही साथ आपके माध्यम से मैं माननीय नेता सदन से एक बात और निवेदन करूंगा कि इसी सदन में आपने हमारे एक दिवंगत विधायक, जिनकी दुर्घटना में मौत हो गयी थी, हमारे भारतीय जनता पार्टी के विधायक थे, श्री घनश्याम शुक्ला जी, उनके प्रकरण में आपने ही इस सदन में परिवार की भावनाओं, लोगों की भावनाओं को देखते हुए सी0बी0आई0 जांच का आदेश किया था। अति उत्तम होगा कि आज आप अपने स्तर से फिर सी0बी0आई0 जांच की घोषणा कर दें। जब आप इस बात के लिये मुतमईन हैं कि इस तरह के अपराधियों को सजा मिलनी चाहिये, लोकतंत्र के हत्यारों को सजा मिलनी चाहिये, किसी जन-प्रतिनिधि की जान से खिलवाड़ करने वालों को सजा मिलनी चाहिये तो मैं चाहूंगा कि अब इस काम को करने में आपको पीछे नहीं रहना चाहिये और सी0बी0आई0 जांच की घोषणा, आपको अपने स्तर से करके अपने बड़पन का परिचय देना चाहिये। हम चाहेंगे कि राजू पाल, विधायक की हत्या पर जो वक्ता विचार व्यक्त कर रहे हैं, शोक संवेदना के रूप में आपके विचार वहां जायेंगे, आपकी बात जायेगी। हम सब लोगों की यही चाह है कि जो हत्याभियुक्त हैं, उनको सही मायने में सजा मिले, राजनीति से बाहर जाकर के, क्योंकि राजनीति राजनीति होती है और राजनीति में हत्या को जो बड़ा मान लेता है, उसको सजा मिलना ही चाहिये, यदि ऐसे लोगों को बढ़ावा मिलता रहेगा तो एक नहीं, मैं समझता हूं कितने ही विधायक होंगे जो यह चाहते हैं कि आप इस मामले में सी0बी0आई0 जांच का आदेश कर दें। मैं तो चाहूंगा कि आज इसी सदन में घोषणा हो जाय तो अति उत्तम होगा। मान्यवर, आप हमारी शोक संवेदनायें इन सभी के परिवारजनों तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री प्रमोद कुमार-

माननीय अध्यक्ष जी, मैं समझता हूं कि इतना भारी दिन, इतना पीड़ादायक दिन शायद इस सदन ने पहले कभी न देखा हो, जब मात्र 28 दिनों में हमने अपने परिवार के 3 सदस्य खो दिये हों। मान्यवर, 25 वर्षों से मैं इस विधान सभा में हूं, जितने भी पीड़ा के दिन आये हैं उसमें कभी ऐसा दुःखद क्षण इस सदन में नहीं आया है। जब परिवार के 3 सदस्यों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करने का दुःखद अवसर मिला हो। मान्यवर, जो आता है, उसे एक न एक दिन जाना होता है, यह सत्य है, लेकिन कुछ लोग अल्पायु में ही चले जाते हैं या अपने पीछे ऐसे अध्याय छोड़ जाते हैं कि उनके जाने से दुःख होता है। अब्दुल कलाम साहब वाराणसी के इतने जागरूक, कर्मठ, मिलनसार और उत्साह, ऊर्जा से भरपूर साथी थे, यह सहसा विश्वास कर पाना कठिन है कि वह अब हमारे बीच नहीं रहे। अभी दो दिन का सदन जब चला था तो वह आये थे, रुग्णावस्था, बीमारी के कारण उन्हें पहचान पाना मुश्किल हो रहा था। उस समय भी दबे मन से लोगों को लगा था कि शायद यह असाध्य रोग इन्हें छोड़ेगा नहीं और हम सबने दिल से यह दुआ की थी कि ईश्वर उन्हें लम्बी उम्र दे और इस कष्ट से वह उबर जायें। लेकिन विधि का विधान और ही था, वह बहुत दिन तक हमारे साथ नहीं रह सके। मैं अपने और अपने दल की ओर से, उनके निधन पर श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं, उनके निधन से

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

न मात्र हमने अपना एक साथी खो दिया बल्कि समाजवादी पार्टी ने अपना एक उत्साही कार्यकर्ता खो दिया और गरीबों, मजलूमों की विधान सभा में आवाज उठाने वाली मजबूत आवाज हमेशा के लिये खामोश हो गयी।

मान्यवर, इलाहाबाद (पश्चिम) से निर्वाचित बहुजन समाज पार्टी के विधायक श्री राजू पाल जो मात्र 30 वर्ष की अल्पायु में आज हमारे बीच में नहीं हैं और सम्भवतः दो दिन के सत्र के अलावा वह निर्वाचित होने के बाद सदन में आये भी नहीं। मुझे कभी अवसर नहीं मिला उनसे मिलने का, कभी मैंने उन्हें देखा भी नहीं था। लेकिन जिन परिस्थितियों में जिस तरह से उनकी हत्या हुई है, उससे सभी सिहरे भी हैं। मैं बहुत ही विनम्रता के साथ संवेदना व्यक्त करता हूं, अपने और अपने दल की ओर से और जैसा कि नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता बहुजन समाज पार्टी ने कहा कि जो अपराधी हों, उनके खिलाफ कठोर कार्यवाही होनी चाहिए। मैं समझता हूं कि यह सदन का एकमत है कि जो भी दोषी हों उनके खिलाफ भारत के कानून के मुताबिक कड़ी कार्रवाई हो, इस पर यह सम्पूर्ण सदन एकमत है। उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए जिससे कि लोकतंत्र में इन कलंकों को और धब्बों को दोबारा हम न देख सकें। मैं समझता हूं कि यही इस सदन की सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है।

श्री रमेश कान्त लवानियां, आगरा से निर्वाचित नगर प्रमुख रहे, मैंने उन्हें विधायक के रूप में कई बार सत्ता पक्ष में और विपक्ष में बोलते हुए सुना था। वह अनुभव से परिपूर्ण थे, वह अपने अनुभवों को अपने साथ समेटे हुए गम्भीर से गम्भीर बातों पर अपने विचार व्यक्त किया करते थे। राजू पाल के निधन से ब0स0पा0 और उनके सभी साथियों को मैं संवेदना व्यक्त करता हूं, कलाम जी के निधन से समाजवादी पार्टी के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं और लवानियां जी के निधन पर मैं भा0ज0पा0 के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। इन्हीं शब्दों के साथ मेरा अनुरोध है कि हमारी और हमारे दल की भावनाओं को उनके परिवारीजनों तक पहुंचा दिया जाए, हम कष्टों की इस घड़ी में उनके परिवारीजनों के साथ हैं। इसी के साथ मैं एक बार पुनः इन सभी लोगों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

* ग्रामीण अभियंत्रण सेवा, पर्यटन मंत्री (श्री कौकब हमीद)-

मान्यवर, अब्दुल कलाम का निधन 05 जनवरी को हुआ, राजू पाल का निधन 25 जनवरी को हुआ और रमेश कान्त लवानियां का निधन 03 फरवरी, 2005 को हुआ। इनके न रहने से सिर्फ इस सदन में ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश में एक कमी रह जाएगी और यह हमेशा याद आते रहेंगे। कुशल कार्यकर्ता के रूप में मैं चाहूंगा कि मेरे और मेरे दल की ओर से मेरी शोक-संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचा दी जाएं।

* श्री राम स्वरूप सिंह (बिजनौर)-

माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता सदन, विरोधी दल के नेता बहुजन समाज पार्टी के नेता, राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता और राष्ट्रीय लोकदल के नेता ने जो विचार व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सम्बद्ध करता हूं और शोक व्यक्त करता हूं। हमारे तीन साथी एक साथ थोड़े समय में ही विदा हो गये, यह दुःखद घटना है। सभी ने अपने शोक-सन्देश में यह बातें कही हैं कि कलाम साहब जो बहुत ही थोड़ी उम्र में चले गये, यह महान दुःख की बात है और भाई राजू पाल जो उनसे भी कम उम्र में विरोधियों द्वारा कत्ल करने पर चले गये, यह उससे भी बड़े दुःख की बात है। माननीय रमेश कान्त लवानियां जी के निधन पर भी दुःख प्रकट करते हुए तीनों दलों के नेताओं, कार्यकर्ताओं और साथियों को जिनको उनके जाने से महान दुःख हुआ है उस दुःख में अपने को शामिल करता हूं और इन सभी को अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी शोक-संवेदनायें उनके परिवारों तक पहुंचा दी जाएं।

(माननीय नेता, उत्तर प्रदेश लोकतांत्रिक कांग्रेस, अखिल भारतीय कांग्रेस और अखिल भारतीय हिन्दू महासभा को पुकारे जाने तथा उनके अनुपस्थित होने पर)

श्री अध्यक्ष-

आज इस अवसर पर जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता बहुजन समाज पार्टी, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता राष्ट्रीय लोकदल और माननीय नेता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने व्यक्त किया है, उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं। आज हमारे तीन माननीय सदस्य हमारे बीच में नहीं है। यह बहुत दुःखपूर्ण घटना है। यह तो विधि का विधान है होता ही रहेगा, लेकिन जैसी बातें कभी-कभी आ रही हैं और जो अपराधी प्रवृत्ति के लोगों द्वारा माननीय जनप्रतिनिधियों की हत्यायें हो रही हैं उस पर भी हम सबको गम्भीरता से सोचना चाहिए और अपने दिल में इस बात को हमें गम्भीरता से निर्णय लेने का साहस पैदा करना चाहिए जिससे इस तरह की घटनायें भविष्य में न हों।

माननीय अब्दुल कलाम साहब से मैं बहुत पहले से परिचित था जब वह समाजवादी पार्टी के विधायक नहीं थे। मैं समाजवादी पार्टी का जनरल सेक्रेटरी था और बनारस मण्डल मेरा कार्य क्षेत्र था तो मेरी उनसे कई बार बनारस में मुलाकात हुई थी। उस समय वह राजनीति में कदम रख रहे थे और काफी प्रभावी थे तथा लोगों के बीच में उनकी बहुत अच्छी साख बन रही थी। समाजवादी पार्टी से चुनाव लड़ने से पहले भी वह एक बार निर्दलीय चुनाव लड़कर काफी अच्छे मत प्राप्त कर चुके थे। यह उनकी लोकप्रियता का परिचायक रहा है। श्री अब्दुल कलाम साहब का जन्म 17 जुलाई, 1958 को वाराणसी में हुआ था। उन्होंने स्नातक तक शिक्षा ग्रहण की थी। वह दो बार 1996 तथा 2002 में निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी उत्तरी, जिला बनारस से समाजवादी पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुये थे। वह विभिन्न राजनीतिक आन्दोलनों में वर्ष 1995, 2000 तथा 2001 में सेण्ट्रल जेल, वाराणसी तथा दो बार जिला जेल, लखनऊ में कुल 7 दिन बन्दी रहे थे। वे शीबा कला केन्द्र, लल्लापुर, वाराणसी के संरक्षक तथा मौलाना बुनकर अस्पताल, वाराणसी के सचिव थे। समाज सेवा में उनकी विशेष रुचि थी। श्री अब्दुल कलाम के निधन से जिला वाराणसी ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी खो दिया।

9695219671

उत्तर प्रदेश विधान सभा के अभी नये, इसी उप चुनाव में जीतकर आये श्री राजू पाल का जन्म 5 जनवरी, 1975 को इलाहाबाद में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा बहुत ऊंची नहीं हो सकी थी लेकिन यह अपने प्रयास से राजनीति में कार्यरत थे। वर्ष 2004 के अक्टूबर के उप चुनाव में इलाहाबाद पश्चिमी क्षेत्र से बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर जीतकर आये थे। उनकी निर्मम हत्या हुई थी इसकी हम सभी निन्दा करते हैं और हम सब इस पर गम्भीरता से विचार करें। मैं एक बार फिर सम्पूर्ण सदन से और सभी माननीय नेताओं से निवेदन करना चाहूंगा कि इस पर मिल बैठकर गम्भीरता से सोचने की आवश्यकता है कि इस पर कैसे रोक लगायी जा सके, इस पर अकेले कुछ नहीं किया जा सकता। इस पर हम सबको मिलकर विचार करने की आवश्यकता है। माननीय राजू पाल के निधन से इलाहाबाद ने एक दैदीप्यमान विधायक खो दिया है।

श्री रमेश कान्त लवानियां का 3 फरवरी, 2005 को इस पृथ्वी से देहावसान हो गया। वह 72 वर्ष के थे। मेरा उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचय 1977 में जब जनता पार्टी की सरकार बनी थी तो स्वर्गीय राज नारायन जी के माध्यम से हुआ था। वह एक अच्छे व्यक्ति थे। यहां सदन में जब वह अपनी बात रखते थे तो बहुत ही चतुराई पूर्ण ढंग से रखते थे, यद्यपि वह बहुत बार नहीं बोलते थे। दो-एक बार मुझे उनको सुनने का अवसर मिला, वह बहुत अच्छे ढंग से अपनी बात रखते थे। भारतीय जनता पार्टी के वह एक स्तम्भ थे। आगरा से विधान सभा के सदस्य आज हमारे बीच से चले गये हैं उनके जाने से आगरा ने एक कुशल राजनीतिज्ञ और समाजसेवी खो दिया है। मैं इन सबके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं। आप द्वारा जो शोक-संवेदना प्रकट की गयी है मैं उसको उनके परिवारों तक पहुंचाने की व्यवस्था करूंगा। आपसे प्रार्थना है कि इन दिवंगत आत्माओं की शांति के लिय 1 मिनट के लिये अपने आसन पर मौन खड़े हों।

(दिवंगत आत्माओं की शांति के लिये सदन के सभी सदस्य एक मिनट मौन खड़े हुए।)

अब हम उठते हैं, कल 11 बजे फिर मिलेंगे।

(इसके बाद सदन का उपवेशन 11 बजकर 43 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

लखनऊ :

दिनांक 14-2-2005

राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,

प्रमुख सचिव, विधान सभा,

उत्तर प्रदेश।

पी0एस0यू0पी0-एल0 9 विधान सभा (29)-4-5-2005-813 (डी0टी0पी0)।